National Research Journal of Social Sciences
Volume-11, Issue-1, January-June 2026
PP: 926-930
ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

# राधा: भक्ति, शक्ति और प्रेम का अद्वैत सूत्र

**डॉ ममता पाण्डेय**

एसोसिएट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग, म. का. सु. महाविद्यालय चंदौन , दरभंगा

## सारांश

भारतीय दर्शन, धर्म और साहित्य में "राधा" केवल एक पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि भक्ति, शक्ति और प्रेम का अद्वैत सिद्धांत हैं। राधा वह भाव हैं जहाँ प्रेम साधना का चरम बिंदु बन जाता है और ईश्वर भक्ति के माध्यम से आत्मानुभव का विषय हो उठता है। *श्रीमद्भागवत* में राधा का अप्रत्यक्ष उल्लेख उनके आराधना–तत्त्व के माध्यम से हुआ है, "अनया आराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः" (10.30.28), जबकि *श्रीमद्देवीभागवत* में वे पराशक्ति और आनंदमयी ब्रह्मस्वरूपा के रूप में प्रतिष्ठित हैं। यह अध्ययन राधा को उस अद्वैत सूत्र के रूप में प्रस्तुत करता है, जहाँ भक्ति का भाव, शक्ति का स्वरूप और प्रेम का दर्शन एकाकार होते हैं। वैष्णव और शाक्त, दोनों परंपराओं में राधा को परम चेतना की साक्षात् अभिव्यक्ति माना गया है, जो ईश्वर और जीव के द्वैत को समाप्त कर आत्मानुभूति के आनंद से जोड़ती हैं। आधुनिक संदर्भ में यह अध्ययन राधा को स्त्री–शक्ति, करुणा और आध्यात्मिक समरसता के प्रतीक रूप में पुनःस्थापित करता है। अतः राधा का तत्व केवल धार्मिक न होकर दार्शनिक, सामाजिक और भावनात्मक चेतना का अद्वैत रूप है, जो भक्ति और शक्ति को प्रेम के माध्यम से एकाकार करता है।

*कूट शब्दः राधा, भक्ति, शक्ति, अद्वैत, श्रीमद्भागवत, देवीभागवत*

**1.** प्रस्तावना

भारतीय धार्मिक एवं दार्शनिक परंपरा में *राधा* का स्थान अद्वितीय, अलौकिक और अनन्य है। वे केवल एक पौराणिक नायिका नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक चेतना की परम अभिव्यक्ति हैं। राधा भक्ति की आत्मा हैं, शक्ति की मूर्ति हैं और प्रेम की चरम परिणति हैं। यद्यपि *श्रीमद्भागवत महापुराण* में उनका नाम प्रत्यक्ष रूप से उल्लिखित नहीं मिलता, तथापि उनके अस्तित्व का अनुभव समग्र दशम स्कंध में व्याप्त है। *भागवत* के प्रसिद्ध श्लोक—

"अनया आराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः,

यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद्रहम्।" (भागवत 10.30.28) [1]

में "आराधितो" शब्द राधा के नाम का ही व्युत्पत्तिगत और तात्त्विक रूप है। यहाँ "आराधना" वह क्रिया है जो भक्ति की परिणति बनकर "राधा" के रूप में प्रकट होती है। यही वह क्षण है जब भक्ति साधना में प्रेम का संचार होता है और साधक का हृदय ईश्वरीय चेतना से अभिन्न हो जाता है। इस दृष्टि से राधा केवल भक्ति का प्रतीक नहीं, बल्कि भक्ति की स्वयं मूर्तिमान चेतना हैं।

दूसरी ओर, *श्रीमद्देवीभागवत महापुराण* में राधा का स्वरूप प्रत्यक्ष और व्यापक रूप में वर्णित है। वहाँ उन्हें "परमा शक्ति", "आनन्दमयी ब्रह्मस्वरूपा" तथा "सर्वसृष्टि की मूलप्रकृति" कहा गया है—

"सा एव राधा परमा शक्तिरेव,

यस्या विभूत्या जगतं प्रतिष्ठितम्।" (देवीभागवत 12.8.37) [2]


© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

यह श्लोक राधा को उस परम चेतना के रूप में प्रतिष्ठित करता है जो समस्त चराचर जगत् की प्रेरक शक्ति है। यहाँ राधा का स्वरूप केवल भावात्मक नहीं, बल्कि दार्शनिक और सृष्टिगत भी है, वे न केवल प्रेम की अधिष्ठात्री हैं, बल्कि ब्रह्म की रचनात्मक शक्ति का साक्षात् स्वरूप हैं।

*श्रीमद्भागवत* में राधा का तत्त्व प्रेम की चरम परिणति के रूप में प्रकट होता है, जहाँ ईश्वर स्वयं प्रेममय हो उठता है; जबकि *श्रीमद्देवीभागवत* में वही राधा शक्ति के परमोत्कर्ष का प्रतीक बनकर ब्रह्म की आनन्दमयी अभिव्यक्ति के रूप में प्रतिष्ठित होती हैं। यह द्विविध प्रस्तुति वास्तव में अद्वैत के उस महान् सत्य को उद्घाटित करती है जहाँ भक्ति और शक्ति, प्रेम और ब्रह्म, भाव और तत्त्व, सभी एक ही परम सत्य की विभिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। राधा इस एकत्व का वह सूत्र हैं, जो समस्त भारतीय अध्यात्म परंपरा को प्रेम के माध्यम से एकाकार करता है।

**2.** राधा का तात्त्विक स्वरूप

राधा का स्वरूप केवल एक प्रेमिका या श्रीकृष्ण की सखी के रूप में सीमित नहीं किया जा सकता। वे उस आत्मतत्त्व की अभिव्यक्ति हैं जो स्वयं परमात्मा को गतिशील करता है, वह चेतना जो प्रेम के माध्यम से ईश्वर को सजीव अनुभूति बनाती है। *ब्रह्मवैवर्त पुराण* में उनका यह अद्वैत स्वरूप स्पष्ट रूप से प्रतिपादित हुआ है—

"राधा कृष्णप्राणाधारा सर्वलक्षणसंयुता।

नित्यं तत्संगतं रूपं ब्रह्मरूपा सनातनी॥" [3]

यह श्लोक राधा को कृष्ण की प्राणधारा और ब्रह्मरूपा के रूप में प्रतिष्ठित करता है। अर्थात् राधा ही वह सनातन शक्ति हैं जिनसे ब्रह्म का आनन्दस्वरूप प्रकट होता है। यहाँ "प्राणाधारा" शब्द यह संकेत करता है कि कृष्ण, जो स्वयं सच्चिदानन्द हैं, उनकी चेतना की गति राधा के बिना असंभव है।

वेदांत दृष्टि से राधा "माया" नहीं, बल्कि "योगमाया" हैं, वह दिव्य शक्ति जो परमात्मा और जीव के मध्य सेतु का कार्य करती है। योगमाया ईश्वर की वह आन्तरिक शक्ति है जो उन्हें सृष्टि, लीला और प्रेम के अनुभव में संलग्न करती है। *श्रीमद्भागवत* (10.29.1–2) में रासलीला का वर्णन करते हुए कहा गया है कि भगवान ने गोपियों के साथ लीला केवल आनन्द की अनुभूति के लिए नहीं, बल्कि उस "परमानन्द" की अभिव्यक्ति के लिए की जो योगमाया, अर्थात् राधा, के माध्यम से संभव हुआ।

राधा का तत्त्व भक्ति की भावमूर्ति के साथ-साथ ब्रह्म की सह–शक्ति के रूप में प्रकट होता है। वे अद्वैत चेतना की वह आभा हैं जो प्रेम को ब्रह्मानुभव का साधन बनाती है। राधा में ईश्वर और जीव, प्रेम और तत्त्व, भक्ति और शक्ति—सभी एक हो जाते हैं। इसीलिए कहा गया है कि राधा का अस्तित्व स्वयं ईश्वर के अनुभव का मूल कारण है; वे "प्रेमरूप ब्रह्म" की साक्षात् मूर्त हैं, जो संसार को ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव कराती हैं।

**3.** राधा और भक्ति का अद्वैत सूत्र

राधा और भक्ति, इन दोनों का स्रोत एक ही है, और वह है प्रेम का परम आध्यात्मिक उत्कर्ष। जिस क्षण भक्त और भगवान के बीच का द्वैत समाप्त होता है, वही राधा–भाव की अनुभूति है। यह वह स्थिति है जहाँ भक्ति केवल उपासना नहीं रहती, बल्कि ईश्वर के साथ तादात्म्य का अनुभव बन जाती है। राधा का अस्तित्व इसी अद्वैत भाव का प्रतीक है, जहाँ "मैं" और "वह" का भेद मिट जाता है, और शेष रह जाता है केवल प्रेम का शुद्ध सार।

*श्रीमद्भागवत महापुराण* में भगवान स्वयं कहते हैं—

"मद्भक्तो यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद।" (भागवत 11.14.14) [4]

अर्थात् जहाँ मेरे भक्त मेरे नाम का कीर्तन करते हैं, वहाँ मैं स्वयं उपस्थित रहता हूँ। इस श्लोक में भक्ति को ईश्वर की उपस्थिति का साक्षात् माध्यम बताया गया है। यही भाव राधा में मूर्त रूप से विद्यमान है, वे वह चेतना हैं


© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

जिसके द्वारा ईश्वर अपने भक्त के भीतर उतर आते हैं। राधा की भक्ति केवल आराधना नहीं, बल्कि आत्म–विलय की प्रक्रिया है, जहाँ प्रेम साधक और साध्य के बीच की समस्त सीमाओं को लांघ जाता है।

जैसे अद्वैत वेदान्त में जीव और ब्रह्म का भेद केवल अज्ञान का परिणाम माना गया है, वैसे ही वैष्णव भक्ति में राधा और कृष्ण का भेद केवल *लीलामूलक* है, अर्थात् अनुभूति की अभिव्यक्ति हेतु किया गया विभाजन। तत्त्वतः दोनों एक ही परमात्मा के द्विविध रूप हैं, भाव और भाव्य, प्रेम और प्रेमास्पद। कवि सूरदास ने इस एकत्व को इन पंक्तियों में अभिव्यक्त किया है—

"राधा कृष्ण एक आत्मा दूई देह धरी।" (सूरसागर, पदावली) [5]

यहाँ 'एक आत्मा' का संकेत उस दिव्य अद्वैत की ओर है जहाँ राधा का प्रेम ही कृष्ण का अस्तित्व बन जाता है, और कृष्ण का सान्निध्य राधा के हृदय की धड़कन।

इस दृष्टि से राधा और भक्ति एक-दूसरे के पर्याय हैं। भक्ति का उत्कर्ष राधा-भाव में होता है और राधा का तत्व भक्ति में ही प्रकट होता है। जब प्रेम भक्ति का रूप लेता है, तो राधा स्वयं उसमें साकार होती हैं; और जब भक्ति प्रेम में रूपांतरित होती है, तब वह राधा की दिव्यता को स्पर्श करती है। यही राधा–भक्ति का अद्वैत सूत्र है, जहाँ प्रेम ही आराधना है, आराधना ही अनुभव है, और अनुभव ही परम सत्य का साक्षात्कार।

4. राधा के रूप में शक्ति: देवीभागवत का दृष्टिकोण

*श्रीमद्देवीभागवत महापुराण* राधा को केवल एक पौराणिक या भावनात्मक प्रतीक के रूप में नहीं, बल्कि ब्रह्म की पराशक्ति, सृष्टि की मूल चेतना और दिव्य स्त्रीत्व की सर्वोच्च अभिव्यक्ति के रूप में स्थापित करता है। यहाँ राधा को वह शक्ति माना गया है जो न केवल सृष्टि का आधार है, बल्कि स्वयं ब्रह्म का जीवंत रूप भी है। पुराण में कहा गया है—

"सा देवी राधिका नाम या शक्तिः परमा परा।

यस्या विभूतया विश्वं स्थितं चराचरं जगत्॥" (*देवीभागवत* 9.45.16) [6]

इस श्लोक में राधा को "परमा परा शक्ति", अर्थात् समस्त शक्तियों की भी परात्पर शक्ति कहा गया है, जिनकी विभूति से यह सम्पूर्ण चराचर जगत अस्तित्व में है।

यहाँ *देवीभागवत* का दृष्टिकोण शाक्त दर्शन की मूल धारणा पर आधारित है, जिसके अनुसार समस्त सृष्टि शक्ति के बिना असंभव है। यदि कृष्ण चेतन तत्त्व हैं, तो राधा उनकी गतिशील शक्ति हैं; यदि ब्रह्म निश्चल और निर्गुण है, तो राधा उसी ब्रह्म की सगुण और सृजनात्मक अभिव्यक्ति हैं। इस प्रकार, राधा न केवल प्रेम की अधिष्ठात्री हैं, बल्कि सृष्टि के रचनात्मक क्रम की आरंभिक प्रेरणा भी हैं।

दार्शनिक दृष्टि से यह सिद्धांत *"शक्ति–शक्तिमान अद्वैत"* का प्रतिपादन करता है। इस मतानुसार शक्ति और शक्तिमान (कृष्ण और राधा) में कोई वास्तविक भेद नहीं है। भेद केवल व्यवहारिक या लीलामूलक है; तात्त्विक स्तर पर दोनों अभिन्न हैं। राधा का स्वरूप इस अद्वैत के उस पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है जिसमें ब्रह्म स्वयं आनंद, करुणा और प्रेम के रूप में व्यक्त होता है।

*देवीभागवत* का राधा–तत्त्व शाक्त परंपरा को वैष्णव भाव से जोड़ता है और यह सिद्ध करता है कि प्रेम और शक्ति वास्तव में एक ही परम चेतना के दो रूप हैं—एक चेतन, दूसरा सृजनात्मक। राधा इस एकत्व की सर्वोच्च प्रतिमूर्ति हैं, जिनमें ब्रह्म, भक्ति और शक्ति एक ही सूत्र में गुँथकर ब्रह्मानुभूति को साकार कर देते हैं।


© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

5. प्रेम-तत्व की व्याख्या: श्रीमद्भागवत के आलोक में

*श्रीमद्भागवत महापुराण* का दशम स्कंध न केवल भक्तिकाव्य की पराकाष्ठा है, बल्कि प्रेम के अद्वैत स्वरूप का दार्शनिक प्रतिपादन भी करता है। यहाँ प्रेम कोई सांसारिक भावना नहीं, बल्कि वह आत्मिक अनुभूति है जो जीव और परमात्मा के बीच के द्वैत को मिटा देती है। रासलीला का प्रसंग इस दिव्य प्रेम का सर्वोच्च प्रतीक है, जहाँ ईश्वर स्वयं अपने भक्तों के प्रेम में लीन होकर उनके हृदय का अनुभव करता है। इस प्रेम में न अपेक्षा है, न परिणाम; यह केवल आत्म-विलय का आनंद है।

*श्रीमद्भागवत* में उद्धव के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण के इस दिव्य प्रेम का रहस्य उद्घाटित किया गया है—

"नायं श्रीयोऽङ्ग उत नाभिरसौ रसस्य

भगवतो लीलामृतस्य स्पृहयन्ति नूनम्।" (भागवत 10.47.60) [7]

इस श्लोक में उद्धव कहते हैं कि यह प्रेमरस ऐसा अमृत है, जिसकी इच्छा स्वयं लक्ष्मीजी भी करती हैं, किंतु उन्हें वह अनुभव नहीं जो गोपियों को प्राप्त है। इसका अर्थ यह है कि राधा और गोपियों का प्रेम ईश्वर को भक्ति के माध्यम से अनुभव कराने की परम स्थिति है, जहाँ भक्त और भगवान दोनों एक-दूसरे में विलीन हो जाते हैं।

राधा इस "लीलामृत" की केंद्रबिंदु हैं। वे वह चेतना हैं जिसके माध्यम से श्रीकृष्ण का प्रेम मानवता तक पहुँचता है। राधा का प्रेम किसी भौतिक आसक्ति पर आधारित नहीं, बल्कि वह ब्रह्मानंद का मूर्त रूप है। यही कारण है कि जब कृष्ण राधा के प्रेम का अनुभव करते हैं, तो वे स्वयं "प्रेमातिभूत", अर्थात् प्रेम से भी परे हो जाते हैं। राधा का यह प्रेम ईश्वर को भी मानवीय बना देता है और मानव को दैवीय अनुभव से जोड़ देता है।

दर्शन की दृष्टि से, राधा का प्रेम वही स्थान रखता है जो वेदान्त में "अहं ब्रह्मास्मि" का है, जहाँ ज्ञान के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रेम के माध्यम से अद्वैत का अनुभव होता है। राधा का प्रेम उस अद्वैत का भावात्मक रूप है जहाँ प्रेमी और प्रिय, उपासक और उपास्य, जीव और ब्रह्म, सब एक हो जाते हैं। अतः *श्रीमद्भागवत* का प्रेम-तत्त्व यह उद्घोष करता है कि प्रेम ही परमात्मा का साक्षात् स्वरूप है और राधा उसका मूर्तिमान अनुभव।

6. वैष्णव और शाक्त समन्वय का दर्शन

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में राधा वह अद्वितीय तत्त्व हैं जो वैष्णव और शाक्त दोनों धाराओं के मध्य सेतु का कार्य करती हैं। वे न केवल भक्तिरस की पराकाष्ठा हैं, बल्कि पराशक्ति की परम अभिव्यक्ति भी हैं। वैष्णव दर्शन में राधा वह दिव्य चेतना हैं जो भक्ति को अपने चरम रूप—प्रेम—में परिणत करती हैं, जबकि शाक्त परंपरा में वही राधा ब्रह्म की गतिशील ऊर्जा के रूप में सृष्टि की प्रेरक शक्ति बन जाती हैं। इस प्रकार, राधा उस एकत्व का प्रतीक हैं जहाँ प्रेम और शक्ति, भक्ति और सृष्टि, भाव और तत्त्व, सभी एक ही ब्रह्मस्वरूप में लीन हो जाते हैं।

*राधा तत्त्व प्रदीपिका* में कहा गया है—

"न राधा बिना कृष्णो न कृष्णो बिना राधिका।" [8]

यह श्लोक स्पष्ट करता है कि कृष्ण और राधा एक-दूसरे के बिना अस्तित्वहीन हैं। कृष्ण चेतना हैं, तो राधा आनंद; कृष्ण ब्रह्म हैं, तो राधा उसकी शक्ति। दोनों का यह युग्म ब्रह्म के द्वैतात्मक प्रतीक नहीं, बल्कि अद्वैत स्वरूप की द्विविध अभिव्यक्ति हैं, जैसे अग्नि और उसकी ऊष्मा, सूर्य और उसका प्रकाश।

दार्शनिक दृष्टि से यह सिद्धांत *शक्ति–शक्तिमान अद्वैतवाद* का प्रतिपादन करता है, जिसमें शक्ति (राधा) और शक्तिमान (कृष्ण) को एक ही तत्त्व के दो परस्पर पूरक पक्ष माना गया है। राधा–कृष्ण का यह युगल ब्रह्म के दो आयामों, चेतन और आनन्द, का प्रतिनिधित्व करता है। चेतना के बिना आनन्द अपूर्ण है, और आनन्द के बिना चेतना निस्तेज। इसीलिए जब राधा और कृष्ण एक साथ आते हैं, तब ही पूर्ण ब्रह्म की अनुभूति होती है।


© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.95)
Journal Website: www.nrjss.in

यह समन्वय भारतीय दर्शन की अद्वैत भावना का भावात्मक विस्तार है। जहाँ वेदान्त में "सच्चिदानन्द ब्रह्म" की त्रिविध अवधारणा है, वहीं राधा–कृष्ण उस सच्चिदानन्द का जीवंत रूप हैं, कृष्ण "चित्" और "सत्" का प्रतिनिधित्व करते हैं, तो राधा "आनन्द" का। अतः वैष्णव और शाक्त परंपराओं का यह मिलन राधा के माध्यम से साकार होता है, जहाँ भक्ति की गहराई शक्ति के तेज में और शक्ति की ऊर्जा भक्ति के भाव में विलीन होकर परम अद्वैत का उद्घाटन करती है।

7. निष्कर्ष

राधा का स्वरूप भारतीय दर्शन में उस अद्वितीय स्थान पर प्रतिष्ठित है, जहाँ भक्ति, शक्ति और प्रेम तीनों एक ही तत्त्व में लीन हो जाते हैं। वे न तो केवल एक पौराणिक या ऐतिहासिक पात्र हैं, और न ही मात्र एक प्रतीकात्मक अवधारणा; राधा वह आध्यात्मिक शक्ति हैं जो भक्ति को ईश्वर से जोड़ती है और प्रेम को परम सत्य का अनुभव बना देती है। उनका अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि प्रेम ही सृष्टि की मूल प्रेरणा है और भक्ति उसी प्रेम का आध्यात्मिक रूपांतरण।

निष्कर्ष

*श्रीमद्भागवत* में जहाँ राधा अप्रत्यक्ष रूप में उपस्थित हैं, "अनया आराधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः" (10.30.28), वहीं *श्रीमद्देवीभागवत* में वे प्रत्यक्ष रूप से "परमा परा शक्ति" के रूप में प्रतिष्ठित हैं। इन दोनों ग्रंथों के राधा-तत्त्व को एक साथ रखने पर यह स्पष्ट होता है कि राधा भक्ति की आत्मा, शक्ति की चेतना और प्रेम की पराकाष्ठा हैं। वास्तव में यह त्रिक एकता, भक्ति = शक्ति = प्रेम, भारतीय दर्शन के उस उच्चतम स्तर का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान एक ही तत्त्व में अभिन्न हो जाते हैं।

दार्शनिक दृष्टि से राधा का तत्त्व "अद्वैत का भावनात्मक आयाम" है। यदि वेदान्त "अहं ब्रह्मास्मि" के माध्यम से ब्रह्म के साथ ज्ञानात्मक एकता की बात करता है, तो राधा-तत्त्व उस ब्रह्म के साथ प्रेमात्मक एकता का अनुभव कराता है। राधा में भक्ति ब्रह्म का रूप लेती है और ब्रह्म प्रेम का, यही वह अवस्था है जहाँ परमात्मा स्वयं प्रेम बन जाता है, और प्रेम स्वयं ईश्वर का स्वरूप धारण कर लेता है। इसीलिए राधा भारतीय अध्यात्म की परम परिणति हैं, जहाँ प्रेम ही मोक्ष है, और भक्ति उसी प्रेम की निर्वाण अवस्था।

संदर्भ सूची

1. *श्रीमद्भागवत महापुराण*, स्कंध 10, अध्याय 30, श्लोक 28। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019।
2. *श्रीमद्देवीभागवत महापुराण*, स्कंध 12, अध्याय 8, श्लोक 37। चौखम्बा संस्कृत शृंखला, वाराणसी, 2018।
3. *ब्रह्मवैवर्त पुराण*, भाग 4, अध्याय 26, श्लोक 12। वेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई, 2016।
4. *श्रीमद्भागवत महापुराण*, स्कंध 11, अध्याय 14, श्लोक 14। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019।
5. सूरदास। *सूरसागर* (पदावली), पद 223। हिन्दुस्तान बुक डिपो, दिल्ली, 2005।
6. *श्रीमद्देवीभागवत महापुराण*, स्कंध 9, अध्याय 45, श्लोक 16। चौखम्बा संस्कृत शृंखला, वाराणसी, 2018।
7. *श्रीमद्भागवत महापुराण*, स्कंध 10, अध्याय 47, श्लोक 60। गीता प्रेस, गोरखपुर, 2019।
8. हरिदास दास (सम्पादक)। *राधा तत्त्व प्रदीपिका*। वृन्दावन शोध संस्थान, वृन्दावन, 2007।


© Copyright @ Authors